नेहरू बाल पुस्तकालय

भूलना मत काका

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

नीलू और जग्गू आधी छुट्टी के समय नीम के पेड़ की छाया में बैठे हैं। नीलू थोड़ी चिंता में है। आधी छुट्टी के बाद पहला घंटा इतिहास का है न—इसीलिए, इतिहास का मतलब है मास्टर भीमचंद, मास्टर भीमचंद का मतलब है, बेंतें—एक के बाद एक, एक के बाद एक!

नीलू ने जग्गू की बगल में कुहनी मारकर कहा—"ऐ जग्गू!"

कुहनी जरा ज़ोर से लगी थी। जग्गू बिगड़कर बोला, "क्या हुआ है तुझे? कितने ज़ोर से कुहनी मारी है!"

"इसलिए कि बिल्कुल यही बहाना मैंने सोच रखा है। तू हमेशा मेरा बहाना चोरी कर लेता है। पहले भी कई बार तू मेरा सोचा हुआ बहाना लगा चुका है और बाद में मैं ख़ामखाह फँस जाती हूँ। इस बार मैं तुझे ऐसा बिल्कुल नहीं करने दूँगी।"

"नीलू, मैंने रातभर जागकर यह बहाना सोचा है। यह मेरा बिल्कुल अपना बहाना है।"

"ऊहुँक्! तू झूठ बोलता है। रातभर जगा था, तो भारत की आज़ादी की पहली लड़ाई क्यों नहीं पूरी याद कर ली?"

जग्गू ने समझौता [illegible] चाहिए न, तो तू ही इसे रख ले। मैं इससे भी [illegible] लूँगा।"

"जैसे?"

"सोचना पड़[illegible]

"तो सो[illegible]

जग्गू ने सोचकर [illegible] गई। गलती से मैंने सिरदर्द के बद[illegible] रहा, मास्टरजी। मैं बिल्कुल सच कह[illegible] पहली लड़ाई का पूरा हाल सुना दूँगा। आप चाह[illegible]

"अरे वाह! यह बहाना [illegible] देख, यह बहाना तू मुझे दे दे। पहले वाला बहाना तू [illegible] ले।"

[illegible] होती हैं।" [illegible] कभी कुछ [illegible] हूँ, उसे तू [illegible] है

"अच्छा, बाबा...।"

नीलू के [illegible]-टन-टन-टन...!

आधी छुट्टी खत्म हो गई थी।

नीलू और जग्गू अपनी कक्षा में पहुँचे और अपने-अपने डेस्क के पीछे बैठ गए। सारे बच्चे भीगी बिल्ली बने बैठे थे। कमरे में सूई भी गिरती तो उसकी आवाज सुनाई पड़ जाती। दूर-दूर तक मास्टरजी की धूल भी उड़ती नहीं दिख पड़ रही थी, मगर बच्चों का हाल बेहाल था।

अब भी तोताराम महारानी लक्ष्मीबाई और अंग्रेजों के बीच हुए स्वतंत्रता-संग्राम का वर्णन इस प्रकार कर रहा था, मानो वही पूर्व-जन्म में महारानी लक्ष्मीबाई का घोड़ा रहा हो।

ले गए थे। लखिया चौधरी?—वह अमीर तो जरूर है, पर इतना अमीर नहीं कि सिर्फ उसके ऊपर मेहरबानी करने के लिए डाकू शिवाजीगंज आने का कष्ट उठाएँगे। तो फिर कौन? डाकू यहाँ से किसी से अपनी पुरानी दुश्मनी निकालने तो नहीं आए! शायद!

मास्टरजी की उधेड़बुन चल ही रही थी कि कक्षा में कंधे पर बंदूक रखे एक आदमी घुसा। इस आदमी के मुँह पर कपड़ा लिपटा था। दुबला-पतला बदन, कमर में गोलियों की पेटी, चेहरा भी साधारण-सा। [illegible]

डाकू के ऐन पीछे [illegible] के मुँह पर भी कपड़ा लिपटा था। उसके शरीर [illegible] शिवाजीगंज कस्बे का ही एक आदमी था [illegible] कोई उसे पहचान न सके इसलिए उसने अपना [illegible] चादर से [illegible] था।

मास्टरजी [illegible] कानी आँख से डाकू को कमरे में घुसते देख [illegible] कि डाकू किसी धनी

आदमी के बच्चे का अपहरण करने आए हैं। इस कक्षा में ऐसा कौन-सा बच्चा है? ऐसा एक ही बच्चा उसके सामने था—जयमोहन। बस, उसी को लेने आया है यह डाकू दल।

किंतु डाकू तो सीधा मास्टरजी की ओर बढ़ा। उसने उनके पाँव छूकर कहा, "पाय लागूँ, पंडितजी।"

मास्टरजी की टाँगें भय से थर-थर काँपने लगीं। उन्होंने मुँह से कुछ कहना चाहा, पर होठों से सिर्फ घिर्र-घिर्र की [illegible] गई।

डाकू हँसा, "पंडित[illegible] मैं [illegible]का बहुत पुराना चेला हूँ। बिरजू नाम है मेरा। कुछ [illegible]? [illegible]प इतिहास पढ़ाते थे। मुझे तो आपकी एक-[illegible] एक गिनते थे। आपको कौन भूल सक[illegible]

मास्टरजी [illegible]ढ़ाए कितने ही चेले-चाँटे बड़े-बड़े ओहद[illegible] थे। [illegible] उनके [illegible]र छूते थे। किसे ख़बर थी कि उनका [illegible] सयोग्य [illegible] भी [illegible]गा! [illegible]क्या पता था कि डाकू बनकर वह एक [illegible] हिसाब चुकाने [illegible]! हे भगवान, इस पापी शरीर में गोली घुस[illegible]

मास्टरजी ने अपन[illegible]से आँखें मूँद लीं। वही हनुमान चालीसा का पाठ!

डाकू ने एक ठहाका लगाया और बोला, "डरिए मत, मास्टरजी! मैं उन बेंतों का बदला लेने [illegible] पर इत[illegible] तो [illegible] अपने [illegible] बं[illegible]ऊँ।"

मास्टरजी की आँखें खुलीं। उन्होंने फिर एक बार कुछ कहने की कोशिश की, पर हाय री तीन इंच का जीभ! जीभ ने इतिहास के सिवा कुछ और उगलने में सहायता करने से इनकार ही कर दिया। उनके मुँह से आवाज तो जरूर निकली, पर वही खाली-पीली घिर्र-घिर्र।

इसी बीच मुँह पर चादर ओढ़े वह जासूस आदमी कक्षा के एक-एक बच्चे को घूर रहा था। चादर के ऊपर निकली उसकी आँखें तेजी से इधर-से-उधर घूम रही थीं। जग्गू पर पहुँच कर उसकी नज़रें रुक गईं। उसने जग्गू और नीलू की तरफ इशारा करके अपने साथी डाकू के कान में कुछ कहा।

के बदले रुपयों की माँग की गई होगी, एक लाख, दो लाख, पाँच लाख—ये माँगें कितने भी रुपयों की हो सकती हैं।

मास्टरजी ने हाथ में लिफाफे पकड़ने चाहे, लेकिन डाकू का डर अभी भी उन पर भूत की तरह सवार था।

थर-थर काँपते उनके हाथों में लिफाफे टिकें, तब न। दोनों लिफाफे हाथ से छूटकर पेड़ के पत्तों की तरह हवा में तै[illegible]

डाकू ने जग्गू और [illegible] तुम दोनों हमारे मेहमान रहोगे।"
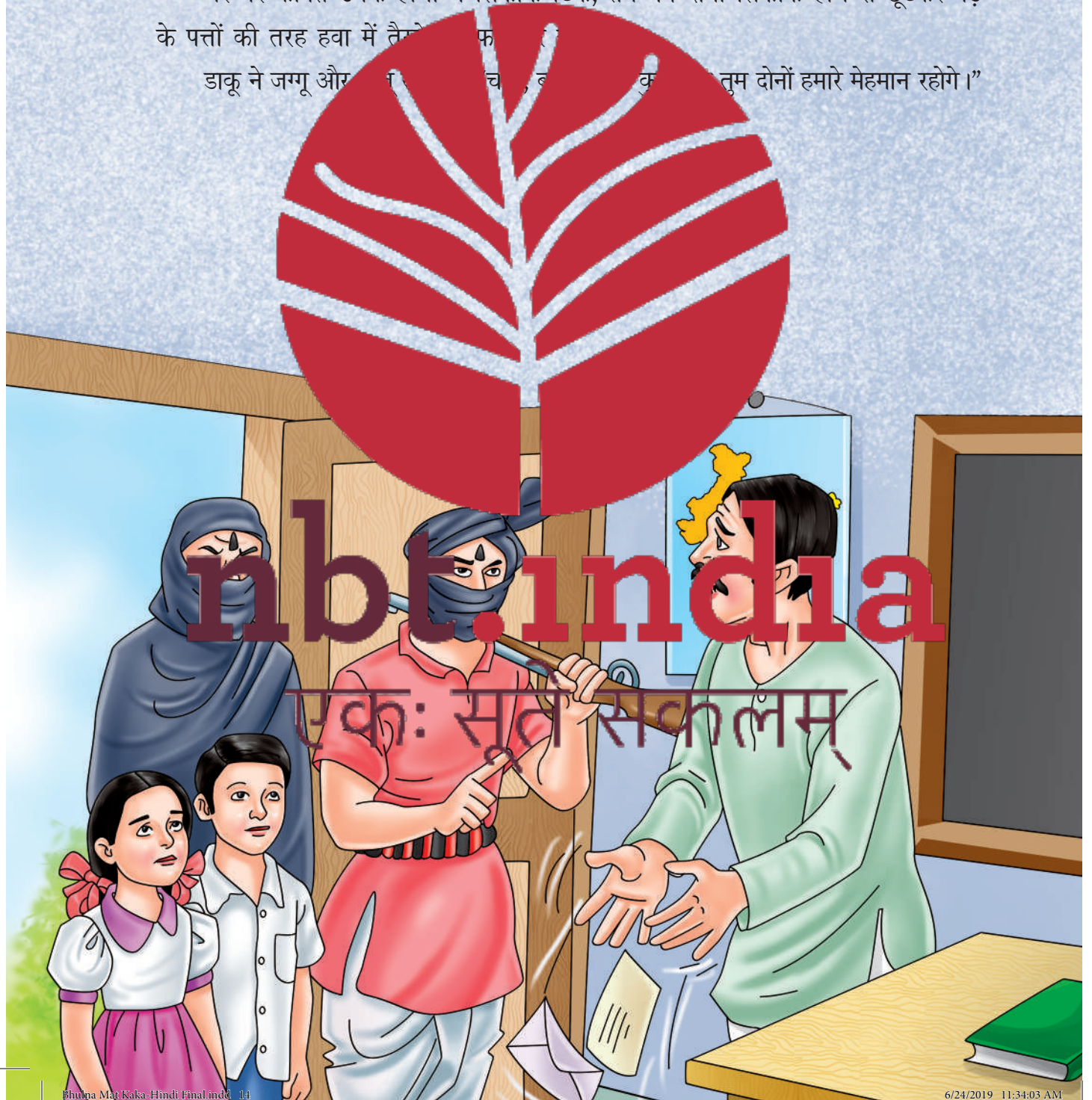
दोनों चल पड़े, मानो चाबी से चलने वाले खिलौने हों। पीछे-पीछे मुँह ढँका आदमी था। स्कूल से बाहर आकर वह तो एक तरफ खिसक गया और डाकू बच्चों के साथ-साथ दूसरी तरफ चल पड़ा।

क़स्बे की सारी गलियाँ और सड़कें सुनसान हो चुकी थीं। कहीं-कहीं कुछ चेहरे खिड़कियों से झाँक भर रहे थे।

डाकू दोनों बच्चों को [illegible] तालाब पर पहुँचा। वहाँ उसने जग्गू और नीलू को एक पेड़ [illegible] दोनों यहाँ आराम करो। मैं एक-दो जल-मुर्गाबि[illegible] की कोशिश न करना।”

जग्गू ने [illegible] डरते हैं!”

नीलू ने भी [illegible] हैं। हम तो राक्षसों से डरते हैं।

डाकू अपनी [illegible] भी तो बहुत बड़े राक्षस हैं।”

नीलू ने डाकू [illegible] करते हुए पूछा, “तुम राक्षस हो तो बताओ [illegible] कि राक्षसों के सिर पर दो बड़े-बड़े सींग होते हैं।”

3

...ं ... ीहड़

सींगों की बात ... हँस ... ट्टी, तो ... ई ... ता रहा। इस बीच नीलू और जग्गू उसे इस ... घूरते रहे ... पूछ ... हों ... एसी ... अनहोनी बात कह दी।

उन्हें वहीं ... क ... ... की आँखें तालाब के पानी पर फिसलती रहीं। ... -मु ... ती ... ाई दी।

धाँय!

बंदूक की ग ... र्गाबी ... पानी लाल हो गया। डाकू उसे निकालने के लि ... ड़ा ... -मुर्गाबी का तड़पना न देख सकीं। उसने मुँह बिचकाया ... क ...।

"ऐ जग्गू!"

"... है?"

"इसका निशाना तो बहुत तेज है, रे!"

"मालूम है।"

"पर मास्टरजी इससे क्यों डर गए थे भला?"

"देखती नहीं, इसके पास बंदूक है?" जग्गू ने कारण बताया।

'यह हमें कहाँ ले जाएगा?" नीलू ने एकदम दूसरा सवाल किया।

"मुझे क्या मालूम?" जग्गू ने खड़तल उत्तर दिया।

"यह हमें अपने साथ क्यों ले जा रहा है?"

"नहीं मालूम।"

"तुझे कुछ मालूम भी है?" चिढ़कर नीलू ने कहा।
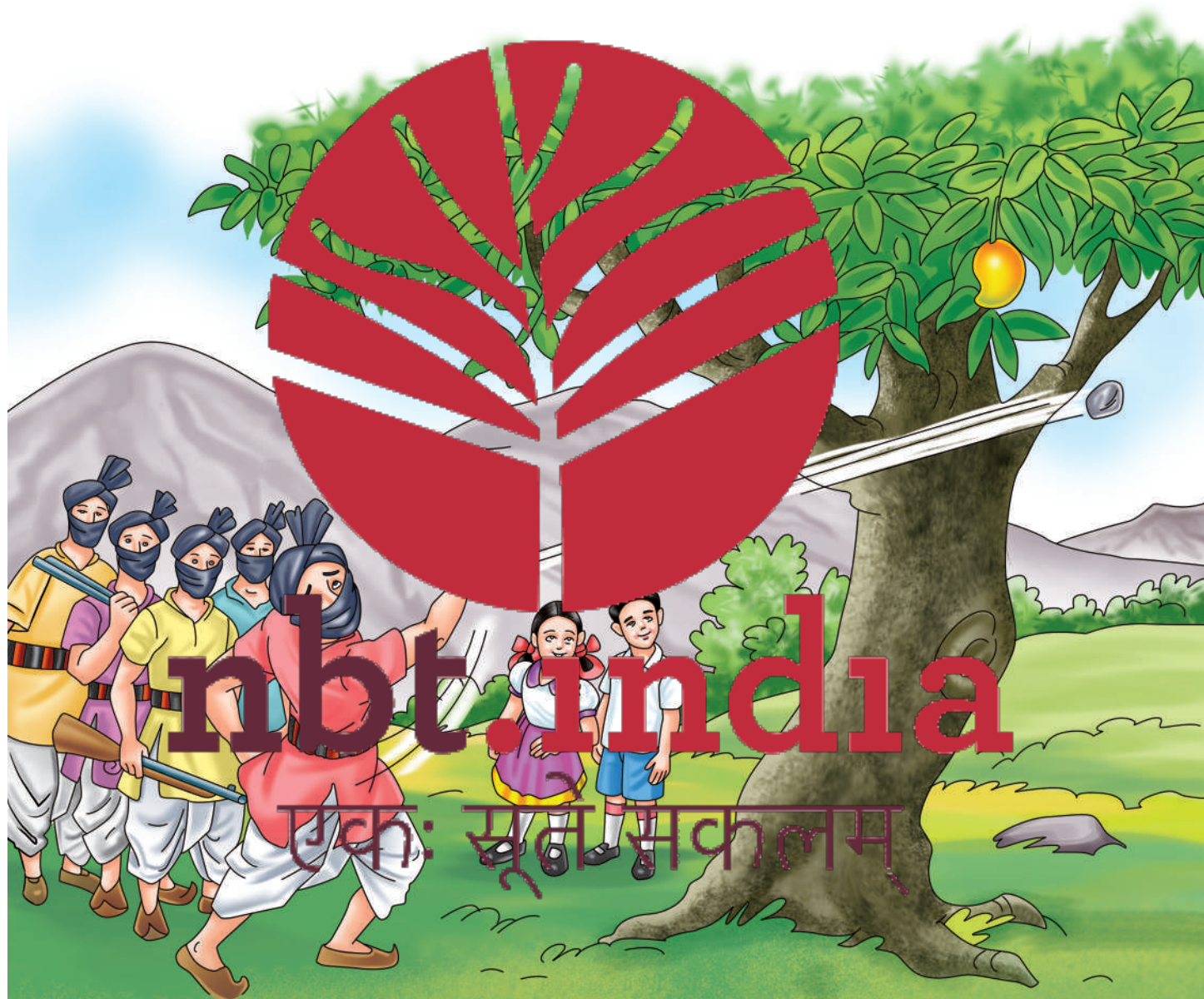
"देख, री नीलू...!"

"शी-ई-ई-ई!" सहसा नीलू ने जग्गू को चुप्पी साध लेने का संकेत किया।

जग्गू ने भी देखा—चार डाकू उन्हीं की तरफ बढ़े चले आ रहे थे। सबका हुलिया आपस में इतना मिलता-जुलता था कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करके पहचान पाना भी मुश्किल था।

नीलू और जग्गू के पास से होकर चारों डाकू तालाब के किनारे चले गए, जहाँ उनका पाँचवाँ साथी जल-मुर्गाबी लिए पानी से बाहर निकल रहा था।

उन सबने और भी कई जल-मुर्गाबियों का शिकार किया। फिर उन्होंने मरे हुए पक्षियों को एक थैले में भरा और [illegible] और जग्गू खड़े थे।

"चलो!" एक [illegible]

"अरे, बच्चे [illegible] उनके लिए लाड़ दिखाता हुआ बोला, जो [illegible]

दोनों बच्चे [illegible] सीमा के साथ-साथ चल रहे थे। इ[illegible] बच्चे स्कूल से भागकर इस पेड़ से आम [illegible] च्चों का हमला! इस पेड़ पर कभी भी आ[illegible] मिलता था। आ[illegible] तोड़ पहले लिए जाते थे।

नीलू और जग्[illegible] देखे थे। दोनों बड़ी बेचैनी से उनके पकने का इंत[illegible] पेड़ के नीचे से गुजरी, तो नीलू खुशी से चहक [illegible]—"ऐ जग्गू! [illegible]

"दीख रहे है[illegible] दोनों पक [illegible]ए हैं।" जग्गू ने पेड़ की पत्तियों के [illegible] नज़र टिकाकर कहा।

"ठहरो [illegible]!" नी[illegible] ने डाकुओं को [illegible]का।

[illegible] ने पूछा [illegible], क्या हुआ?"

"आँख के अंधे हो! दीखता नहीं, हमारे आम पक गए हैं। हमें इन्हें तोड़ना है।" नीलू ने बताया।

"आम! इस पेड़ पर आम कहाँ!" डाकू ने पेड़ को देखते हुए कहा।

"तुम तो सचमुच अंधे ही हो!" नीलू ने पेड़ की घनी पत्तियों में एक तरफ उँगली उठाकर दिखाते हुए कहा।

डाकू को भी हरे पत्तों के बीच एक पीला-सा आम चमकता दिखाई पड़ने लगा। जाने क्या सोचकर उसने आम की तरफ बंदूक का निशाना साधा।

“ठहरो! तुम बहुत जल्दी मचाते हो। आम जल-मुर्गाबी नहीं है, जो बंदूक से मर जाएगा। इसे जग्गू ढेले से अभी तोड़ लेगा।” नीलू ने समझाया।

जग्गू ने इसी बीच कई ढेले इकट्ठे कर लिए थे। उसने आम की तरफ निशाना साधा। उसका ढेला छूटने से पहले ही [illegible] आम टूटकर नीचे आ गिरा।

डाकू ने कड़कदार [illegible]

नीलू आम उ[illegible] गोली से तो आम सभी तोड़ सकते हैं। [illegible] ना तो जग्गू ही लगा सकता है।”

डाकू हँसा [illegible] है। [illegible] बंदूक से आम नहीं तोड़ सकता, अब कहती है, [illegible] बहादु[illegible] एँ भी, बाएँ भी।”

“ख़बरदार, [illegible] कमल नहीं कह सकते तो नीलू बोलो। नी[illegible] मैं बुरा नहीं मानूँगी।”

डाकू मानो उसे [illegible] की क्या बात है? मैं तुम्हें नीलू ही कहूँगा। अब कहो [illegible] दूँ।”

“तुम दूसरा [illegible]म तोड़ दोगे तो मैं तुम्हारा निशाना जग्गू से अ[illegible] मान लूँगी।”

[illegible] वह ढेले ले[illegible] जुट गया [illegible] निकल गया। नीलू हँस पड़ी।

दूसरा ढेला पहले से भी ज्यादा दूरी से होकर गया। नीलू तालियाँ पीटने लगीं। फिर तीसरा ढेला भी पहले के रास्ते गया।

जग्गू एक तरफ खड़ा यह निशानेबाजी देख रहा था। दो-चार और ढेले फेंककर डाकू ने हार मान ली। नीलू पास खड़े जग्गू से बोली, “लो, अब तुम अपनी निशानेबाजी का कमाल दिखाओ।”

जग्गू ने डाकू से कहा, "ढेले से आम तोड़ना हर किसी के बस की बात नहीं होती।"

जग्गू ने निशाना साधकर ढेला छोड़ा, तो आम खट् से टूटकर नीचे आ गिरा।

नीलू ने डाकू को चिढ़ाया, "देखा, मैंने कहा न था!"

दूसरा डाकू हँसकर पहले के कान में बोला, "इसके बाप ने रुपया न दिया, तो हम इसे अपने दल में शामिल कर लेंगे—क्या खयाल है?"

दोनों डाकू हँस पड़े।

नीलू और जग्गू [illegible] मगन थे।

पाँच मिनट [illegible] उनकी जीप खड़ी थी।

दोनों बच्चों सहित पाँचों डाकू जीप में लद गए। जीप चल पड़ी। कुछ दूर आगे जाकर जीप ने मुख्य सड़क छोड़ दी। अब डाकू लोग ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे। जीप सवार सभी लोग हिचकोले खा रहे थे। नीलू बार-बार जग्गू के ऊपर गिर पड़ती थी। रास्ते के दोनों ओर मिट्टी के ढूह लगे हुए थे। चारों ओर वे नन्ही-नन्ही पहाड़ियों की तरह इस प्रकार छाए हुए थे कि पास से भी जीप को देखना कठिन था।

एक कंदरा-सी जगह में पहुँ[illegible] रोक दी, जो उसे चलाता ला रहा था। सारे डाकू नीचे उतर आ[illegible]

उसके बाद डा[illegible] पगडंडियों पर रास्ता नापती टोली अंत में एक[illegible] खड़े थे। उन तंबुओं के निकट ही एक [illegible] बँधा हु[illegible]।

टोली को [illegible] तंबू में से एक और डाकू निकलकर [illegible] कि [illegible] उन सब डाकुओं का मुखिया था।

"जग्गू रे, य[illegible] भयानक आदमी मा[illegible] ने सहमकर कहा।

जग्गू की अपनी [illegible]! इस वक्त चुप रहने में ही अपनी भलाई है। मे[illegible] सरदार है।"

एक डाकू ने सरदार के [illegible] कहा, "ले आए, काका।"

अब सरदार ने [illegible]-जग्गू की ओर घूमा, और बोला, "तुम्हें कोई तक[illegible]फ तो नहीं हुई, बच्चो! इनमें [illegible] तो बताओ, मैं [illegible]"

[illegible]

क्यों लाए हैं?"

मुखिया का[illegible] दिया, "[illegible] बेटी! हमें कुछ रुपयों की जरूरत थी। मैंने तुम्हें इसलिए पकड़वाकर [illegible] कि तुम्हारे माँ-बाप पैसे देकर तुम्हें छुड़ा लें।"

"कितना पैसा?" नीलू ने पूछा।

"तुम इतने प्यारे-प्यारे बच्चे हो। तुम्हें छोड़ने का कम-से-कम पाँच-पाँच हजार रुपया तो लेंगे ही।"

“मेरे पिताजी को तो जब पता चलेगा कि मैं डाकुओं के पास हूँ, तो वे एकदम पाँच हजार रुपया लेकर मुझे लेने के लिए दौड़े चले आएँगे।”

“वह तो मेरे पिताजी भी दौड़े आएँगे।”
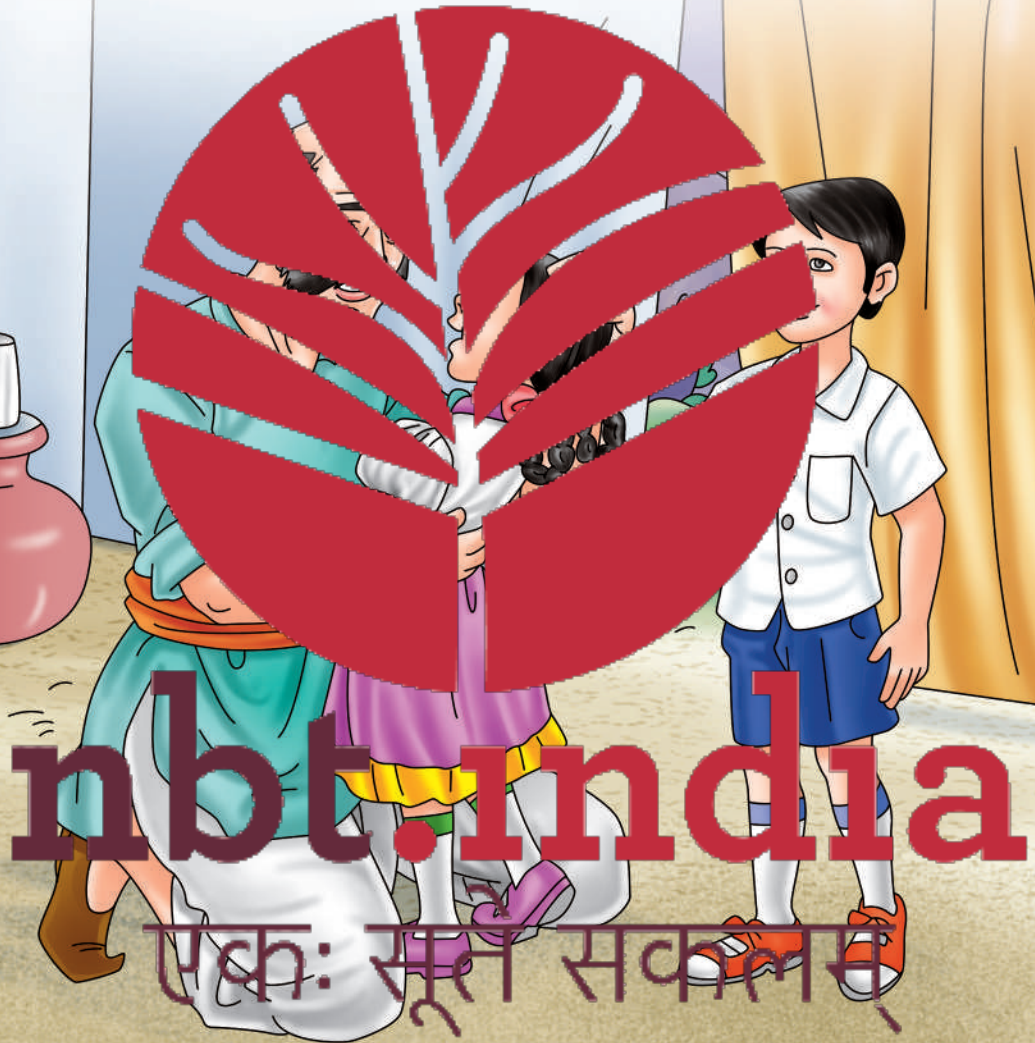
"हो सकता है, मेरे पिताजी और तुम्हारे पिताजी दोनों इकट्ठे ही यहाँ आएँ।"

जग्गू ने माना। "हाँ, यह भी हो सकता है।"

डाकुओं ने जो खाना तैयार किया था, वह घर के खाने से किसी तरह कम नहीं था। उनकी बनाई खीर तो बहुत ही स्वादिष्ट थी। खाते रहो और लार टपकाते रहो। नीलू और जग्गू ने भी डटकर भोजन किया।

प्रश्न यह उठा कि सोने [illegible]। जग्गू और नीलू ने फिलहाल भागने का इरादा छोड़ [illegible] आराम से खेला जा सकता था—आँख-मिचौली [illegible] ढूँढ़ने वाले की नाक में दम आ जाए।

दोनों को आँख [illegible] खेल [illegible] खूब [illegible]।

फिर दोनों [illegible]

रात को नीलू ने [illegible] देखा [illegible] और जग्गू डाकुओं के बीच रहते-रहते [illegible] हैं। उनके पिता [illegible] उन्हें [illegible] नहीं आए थे। एक दिन दोनों ने तय [illegible] भागना चाहिए। बस, फिर क्या था, दोनों रात [illegible] काका की तलवार संभाली और आगे-आगे वह, पीछे-पीछे [illegible] ने [illegible] पकड़ा। बड़े मज़े में गप्पें मारते चले जा रहे थे कि अचानक एक गर्जना सुनाई पड़ी। नीलू काँप उठी। उसने जो नज़र उठाई, तो [illegible] है [illegible] बब्बर [illegible] खड़ा है [illegible] अपने भयानक दाँत निकाले, और नीलू [illegible] जग पड़ी।

जग्गू भी उसकी चीख सुनकर जग उठा। कुछ दूरी पर लेटा मुखिया काका भी। उसकी समझ में नहीं आया कि वह उस समय कहाँ थी। चारों तरफ चाँदनी छिटकी हुई थी। उस चाँदनी में बीहड़ कितने सुंदर दिखाई पड़ते थे। मगर वे डरावने भी उतने ही थे। धीरे-धीरे नीलू को सब याद आ गया। वह आँखें टिमटिमाते हुए बोली, "काका, मैंने एक बहुत बुरा सपना देखा है।"

"कैसा सपना?" काका ने पूछा।

"सपने में मुझे एक शेर खाने को आ रहा था।"
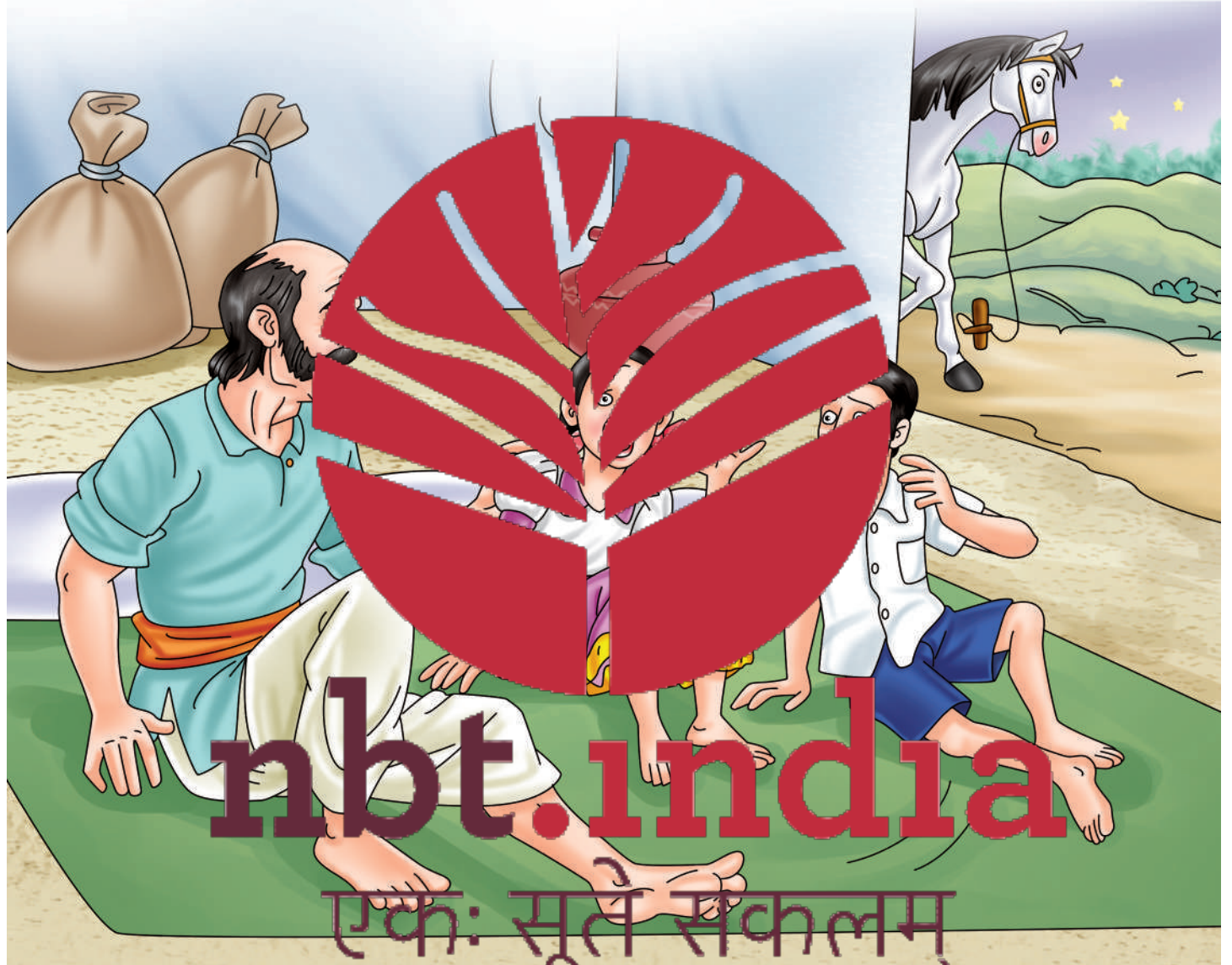
"मेरे होते किस शेर की मजाल है, जो मेरी बिटिया की ओर टेढ़ी आँख से भी देख सके! ले, थोड़ा पानी पी ले, फिर बुरे सपने नहीं आएँगे।" काका ने अपने हाथ से सुराही से पानी का गिलास भरकर नीलू को दिया।

पानी पीकर नीलू फिर सो गई।

सुबह काका उठा, तो सबसे पहले उसकी निगाह जग्गू और नीलू के बिस्तरों पर पड़ी। दोनों ही अपने-अपने बिस्तरों पर मौजूद नहीं थे। थरथराए-से काका ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई। वे कहीं भी तो दिखाई नहीं पड़ रहे थे।

"नीलू बिटिया!" काका ने आवाज़ दी।

"नीलू बिटिया!" मिट्टी [illegible] की गूँज आई।

जवाब नदारद था [illegible]

तब एक गिरो[illegible] काका बोले, "मुझे लगता है कि उन लोगों ने [illegible] ज़्यादा दूर नहीं गए होंगे। तुम सब चारों [illegible]। जिसे भी वे मिल जाएँ, वह मोर [illegible] अपनी [illegible]ज बंद करके वापस लौट आएँ।" मु[illegible] का हु[illegible]

एक के बाद [illegible] के डाकू बीहड़ [illegible] काका का मन बेचैन हो रहा था। यदि दोनों [illegible] आएँगे। फिर उन्हें इस जन्म में तो बीहड़ से बा[illegible] परिणाम यह होगा कि फूल से कोमल दोनों बच्चे भूख-प्यास से [illegible] दे देंगे। उनके गले प्यास से सूख रहे होंगे, किंतु उन्हें पानी मिलेगा कहाँ!

[illegible] गया। अपनी ज़िंदगी में [illegible] चिंता से [illegible] थी। पानी [illegible] अपने खेमे में घुसा।

जैसे ही काका ने खेमे का परदा उठाया, नीलू ने 'हाऊ' कहकर उसे डराना चाहा।

काका ने नीलू को देखा, तो उसे छाती से लगा लिया।

"अरे, तू कहाँ छिपी बैठी है! सारे जन तुम लोगों को बीहड़ों में ढूँढ़ रहे हैं।"

"क्यों ढूँढ़ रहे हैं? हम कोई नन्हे-मुन्ने बच्चे थोड़े ही हैं, जो रास्ता भूल जाएँगे।" नीलू ने अकड़कर कहा।

काका भौंचक्का रह गया। उसने गिरोह के कई जनों के विरोध के बावजूद उन दोनों बच्चों को साथ ले लिया। गिरोह के साथ वे दोनों भी इस तरह फुदक-फुदक कर चल रहे थे मानो ननिहाल जा रहे हों।

काली माई के मंदिर से कुछ दूरी पर, एक मोड़ पर, पेड़ का मोटा तना काटकर सड़क पर डाल दिया गया। दुल्हन को लेकर आती सजी-धजी कार जैसे ही मोड़ पर मुड़ी, सामने तना आ गया। ड्राइवर ने [illegible] से [illegible] कार चूँऊऊऊ कर आवाज करती हुई रुक गई।

कार में बैठा [illegible] पोल[illegible] समझ [illegible]। [illegible] से राइफल की नली कार से बाहर निकाल ली। [illegible] ने [illegible] बजाय [illegible] उसे [illegible] कि डाकू उसकी राइफल देखकर डर जाएं।

धाँय!

हवा की तेजी से [illegible] आई और [illegible] राइफल [illegible] से टकराई। एक तेज झटके के साथ [illegible] खे के [illegible] से छूट गई। [illegible] झाड़ियों में छिपे डाकुओं ने कार को चारों [illegible] कु[illegible] लू भी थे। काका ने बड़े इतमीनान से आगे ब[illegible] से [illegible] की पेटी ले ली और राइफल के लिए फिर हाथ बढ़ाया। [illegible] दोनों चीज़ें काका के हवाले कर दीं। फिर वह टुकुर-टुकुर उसका मुँह देखने लगा।

[illegible] पिछली सीट पर दूल्हा-दुल्हन मौजूद थे। काका [illegible] मियाँ से [illegible] "बेटा, आम[illegible] पर [illegible] खुशी के मौके पर डाका नहीं डालते। लेकिन आज [illegible] मजबूरी [illegible] हालत में ऐसा करना पड़ा। बिटिया से बोलो कि सारे गहने उतारकर और नगदी हमारे हवाले कर दे।"

दूल्हे मियाँ ने जेब से सौ-सौ के नोटों की गड्डी निकालकर काका की ओर बढ़ा दी। "यह लीजिए, पूरे दस हजार हैं। अब आप कृपा करके हमें जाने दीजिए। मेरी धर्मपत्नी के गहने मत लीजिए। मेरी इज्ज़त का सवाल है।"

काका ने नोटों की गड्डी लेकर जेब में डाली और शांत स्वर में बोले, "इनसे हमारा काम नहीं चलेगा, बेटा। बिटिया से बोलो, गहने उतार दे।"

एक डाकू गरजा, “हुक्म हुक्म है। समझ...”

काका ने आँखें तरेरकर उस डाकू की ओर देखा। वह बीच में ही यों चुप हो गया मानो ग्रामोफोन के बजते रिकॉर्ड पर से सूई उठ गई हो।

दूल्हे ने काका के आगे फिर विनती की। काका जितने शांत थे, उतने ही दृढ़ भी थे। वह अपने निश्चय से जौ भर भी टस-से-मस नहीं हुए।

इधर तो काका और दूल्हे [illegible] जग्गू मियाँ ड्राइवर से उलझ गए।

“ऐ ड्राइवर!”

“जी, सरकार! [illegible]”

“नीचे उतरो [illegible]
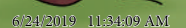
ड्राइवर दरवाजा खोलकर नीचे उतर आया।

“कार में कुछ मिठाई वगैरह भी है या नहीं? तुम लोग शादी में से आ रहे हो न?” जग्गू ने ड्राइवर से इस तरह धीमे स्वर में पूछा, मानो बड़े रहस्य की बात हो।

ड्राइवर ने उत्तर दिया, “पूरी डिग्गी मिठाई से भरी है, मालिक।”

“भरी है, तो दो टोकरे निकालकर हमें दे दो।”

ड्राइवर ने बिना चूँ-चपड़ [illegible] के बजाय चार टोकरे निकालकर जग्गू के हवाले कर दिए। [illegible] हुआ था कि वह क्या हुक्म देते हैं? काका के आँख[illegible] दुल्हे के शरीर में घुस जातीं। डाकुओं में से कि[illegible] कर मिठाई हथिया ली है।

मिठाई के [illegible]

“जी, मे[illegible]”

“हम दुल्हन का [illegible] बस थोड़ा-सा। काका से शर्म लगती [illegible] मेरी तरफ [illegible]

ड्राइवर ने [illegible] दी। मालकिन की क्या मजाल जो नीलू का [illegible] अपना चेहरा कार की खिड़की से बाहर निकाला और घूँघ[illegible] देखती रही। जग्गू ने भी धीरे-धीरे दुल्हन को देख [illegible] लिया।

[illegible] कंधे से [illegible] उतारकर इनके [illegible] रही, तो गह[illegible] और [illegible] हमें [illegible]।”

दुल्हन चुपचाप अपने गहने उतारने लगी।

बिजली के झटके की तरह नीलू ने कार का दरवाजा खोला और गहने उतारती दुल्हन का हाथ पकड़ लिया। वह काका से बोली, “काका, मैं तुम्हें इसके गहने नहीं लेने दूँगी।”

काका ने समझाया, “गहने बहुत जरूरी चाहिए, बेटी।”

“किसलिए चाहिए?” नीलू ने पूछा, “तुम गहने कहाँ पहनते हो? तुम्हारे पास काकी भी तो नहीं है, जो गहने पहनेंगी।”

काका के चेहरे पर भी हँसी की रेखा फूट पड़ी। वह बोले, “अब मैं तेरी काकी भी लाऊँगा, बेटी। उसके लिए तो गहने चाहिए ही।”

“काकी अपने गहने अपने घर से ले आएगी।” नीलू ने कहा।

एक डाकू ने दुल्हन को डपटा, “ऐ, बच्ची की बातों पर मत जाओ। गहने उतारो, वरना हम सारे गहने जबरदस्ती उतार लेंगे।”

“ठहरो।” हवा में जग्गू [illegible]

सबने चौंककर [illegible] दो पत्थर थे।

“जिसने भी [illegible] मारकर उसकी आँखें फोड़ दूँगा। तुम लोग [illegible]
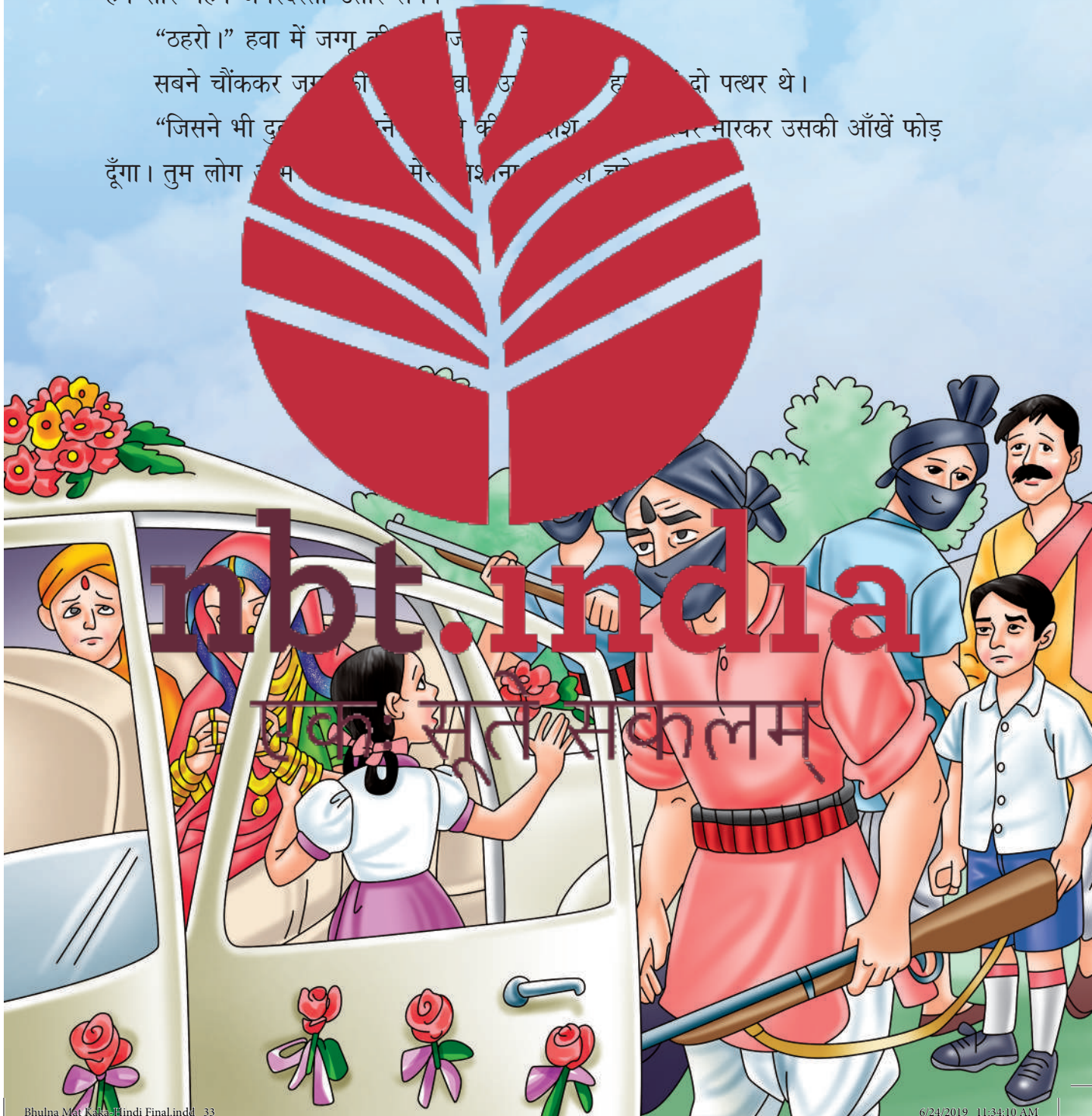
काका ने जग्गू की तरफ देखा— फिर उन पत्थरों को भी देखा, जो उसके हाथों में थे। दोनों पत्थर इतने बड़े जरूर थे कि किसी की भी आँख बड़े मज़े में फोड़ सकते थे। काका परेशान-से होकर बोले, "तुम्हें भी गहने उतरवाने पर ऐतराज़ है?"

जग्गू ने कहा, "जब नीलू ऐसा नहीं चाहती, तो मैं भी नहीं चाहता।"

नीलू ने बताया, "काका, यह दुल्हन एकदम मेरी दीदी जैसी लगती है।"

जग्गू ने उसकी हाँ-में-हाँ [illegible] वाली दीदी जैसी।"

काका बड़ी विचि[illegible] भी नाराज़ नहीं करना चाहते थे और उस समय [illegible] उन्हें एक राह सूझी। वह एक डाकू के कान में [illegible] तुम लोग पीछे से कार में से हरेक काम [illegible] छुए, समझे?"

काका [illegible] तुम्हारी जबलपुर वाली दीदी की! उसने [illegible] र डाली। चलो, वापस चलो। हरिया, [illegible] ओ।"

काका जग्गू-[illegible] उनके मन में जैसे काँटा-सा चुभ रहा था—अपने [illegible] सचमुच ही दुल्हन को बख्श देता तो क्या हो जाता? तब [illegible] के दूसरे लोग यही कहते कि काका का दिमाग फिर [illegible] है। बच्चों के कहने में आकर डेढ़ लाख का माल हाथों से निकाल दिया।

[illegible] और [illegible] जितने [illegible] आज [illegible] कभी [illegible] डाके में [illegible] उनके हा[illegible] था। मिठाई के [illegible] चार [illegible] ये [illegible] दोनों डाकुओं के सिरों पर लदे हुए थे, क्योंकि उन्हें लिए बिना जग्गू और नीलू टस-से-मस नहीं हो रहे थे। नीलू को तो सबसे ज़्यादा खुशी इस बात की थी कि उसने जबलपुर वाली दीदी जैसी एक दुल्हन के गहने उतारने से बचा लिए थे।

यह अलग बात थी कि कहीं दूर उस समय वही दुल्हन रोती-पीटती अपना एक-एक गहना उतारकर डाकुओं के हवाले कर रही थी।

"तुम्हें तो कुछ भी पता नहीं, काका। तुम बहुत भोले हो। परी के हाथ में जादू का डंडा होता है। उसे घुमाकर परी जो चाहे हो सकती है।"

"डाकू भी बन सकती है?"

"हाँ, डाकू भी बन सकती है।"

"तितली भी बन सकती है?"

"परी को कुछ और न [illegible] हो, [illegible] ही तो नाचती है।"

"अच्छा, नीलू बेटी [illegible] तितली से वापस परी में बदलने के लिए जादू का [illegible] घु[illegible]?" [illegible]

नीलू ने कहानी आगे बढ़ाई—जंगल में पहुँचकर भाई ने तितली को पकड़ लिया। वह उस तितली को मारने ही जा रहा था कि तितली बोली, "ठहरो, मुझे मत मारो। मैं नीलमपरी हूँ।"

काका ने शंका प्रकट की—"तितली बोली!"

"वह साधारण तितली थोड़े ही थी, काका। वह तो नीलमपरी थी। भाई ने तितली को छोड़ दिया। और लो, उसके सामने तो नीलमपरी खड़ी थी। नीलमपरी की नीली आँखें होती हैं, नीले पंख होते हैं और [illegible] है।"

हरिया बोला, "[illegible] बर्तन में गिर गई होगी।"

नीलू नाराज़ [illegible] का मज़ाक उड़ाते हो।"

काका ने [illegible] बिटिया के सामने से एकदम दफ़ा हो [illegible] तुम्हारा [illegible] मज़ [illegible] ज़्ज़ती करो!"

हरिया ने [illegible] नन्ही सरकार। पर मुझे कहानी जरूर पूरी सुन [illegible]

तभी फत्तू [illegible] भी कहानी सुनने के लिए [illegible] उन सबको बैठा देखकर एक-एक करके दू [illegible] जुटे [illegible] रोह ही बैठा नीलमपरी की कहानी सुन रहा था।

नीलू ने जल्दी-जल्दी [illegible] बढ़ा [illegible]

भाई बोला, "ऐ नीलमपरी, मेरी बहन हँसती नहीं है। उसका इलाज़ बता।" नीलमपरी बहुत [illegible] होती है [illegible] दुख दूर करती है। नीलमपरी ने कहा, "सतरंगे पहाड़ की ढलान पर [illegible] है—फफानू [illegible] उस फल [illegible]

काका से बिना बोले रहा न गया। "हँसी फल में कैद है! बड़ी अजीब बात लगती है।"

"मगर सच्ची है।" नीलू ने ज़ोर देकर कहा, "यह कहानी मेरी किताब में लिखी है और किताब में कोई झूठी बात थोड़े ही लिखी होती है। अब मुझे मत टोकना—नहीं तो मेरी कहानी कभी खत्म ही न होगी।"

काका बोले, "नहीं खत्म होगी, तो हम भी यहाँ से नहीं उठेंगे।"

कहानी आगे सरकी—"फफानू को लाना इतना आसान काम नहीं है, जितना तुम लोगों

के लिए डाका डाल लेना है। फफानू एक सीधी ढलान पर उगा था। भाई उस तक पहुँचे तो कैसे पहुँचे?"

जाने कौन डाकू बोला, "हाँ, बेचारा कैसे पहुँचे!"

उसी समय एक डाकू ने आकर काका से कहा, "एक खुशखबरी है, काका। ज़मींदार पाँच लाख...!"

काका ने उसका मुँह [illegible] [illegible] बोले, "जग्गू बेटे, तुम्हारे पिताजी पाँच हजार रुपया देने [illegible] पास दो-तीन दिन ही और रहोगे।"

7

[illegible]जना

काका ने 15 वर्ष [illegible] अपने गिरोह के किसी आदमी का चेहरा [illegible] होगा। उन्होंने अपने शांत-गंभीर स्वर [illegible] हो न कि कल्लन ने इस अड्डे का पता उगल [illegible]?"

डाकू ने सि[illegible] कहा, "[illegible]का[illegible]

कल्लन गिरोह[illegible] पुलिस से पिछली मुठभेड़ ऐसी जगह हुई थी कि[illegible] सुभिता ही नहीं मिल पाया था। घायल कल्लन पुलिस [illegible] ने इसीलिए पुलिस के थानेदार ब्रजराजसिंह की [illegible] नीलकमल यानी नीलू का अपहरण किया था। साथ ही उनको ख़बर दे दी [illegible] या [illegible] घायल कल्लन को छोड़ दें नहीं तो [illegible] बेटी का [illegible] कर दिया जाएगा।

नीलू ने इस बीच काका के दिल में ऐसा स्थान बना लिया था कि काका का सारा दाँव ही उल्टा पड़ गया था। पिछली सारी रात जागकर वह यही सोचते रहे थे कि काश वह भी किसी कस्बे में किसी साधारण नागरिक की तरह अपने बाल-बच्चों के साथ रह रहे होते। दिनभर कहीं काम करते और संध्या समय बच्चों की भोली-भाली बातों से अपना मन बहलाते। लेकिन क्या अब यह संभव था?

नहीं—अब चंबल में बहुत पानी बह चुका था।

उसी डाकू ने सूचना दी, "काका, हमें जल्दी ही कुछ करना होगा। पुलिस की टुकड़ी बहुत नज़दीक पहुँच चुकी है। डेढ़-दो घंटे के अंदर-अंदर हम यहीं पर घेर लिए जाएँगे।"

गिरोह के कई आदमी इस तरह उछले मानो उन्हें बिजली का करंट छू गया हो। काका को भी योजना बनाने में ज्यादा समय नहीं लगा।

"पुलिस का दल दक्खिन की तरफ से आ रहा है और वह सीधा उत्तर की ओर बढ़ेंगे। पश्चिम की ओर काफी इला[illegible] नेता सपने में भी नहीं सोच सकता कि हम लोग मैदान की [illegible]

यह योजना [illegible] समय विरोध की कोई गुंजाइश नहीं थी। सिर [illegible]

टोली जरूरत का सामान इकट्ठा करने में लग गई।
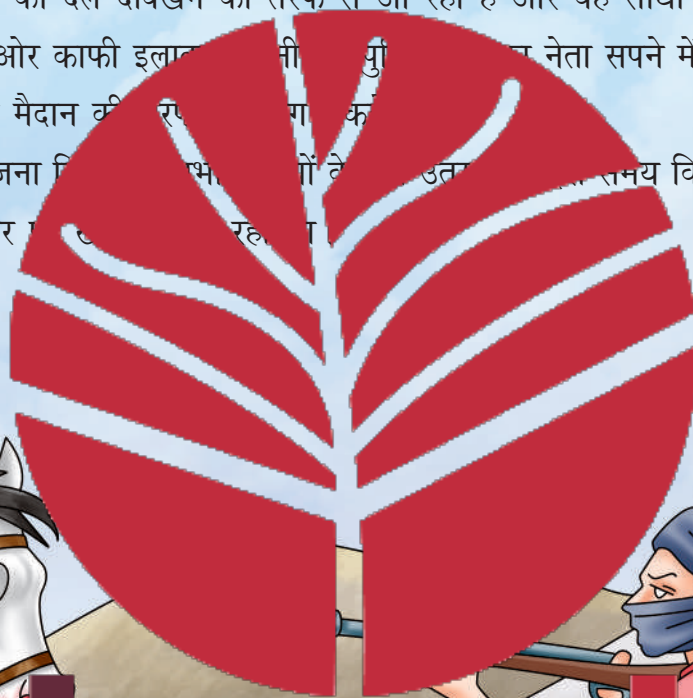
एक सदस्य ने पूछा, "तुम्हारे घोड़े का क्या होगा, काका?"

काका के पास दुर्लभ नस्ल का एक घोड़ा था। चंबल के बीहड़ों में वह तीर की तरह दौड़ता था। लेकिन बीहड़ तो बीहड़ ही थे। एक गड्ढे में गिरने से उसके अगले दोनों पैरों में खासी चोट आई थी। वह अब धीमे-धीमे ही चल सकता था—और वह भी जब पीठ पर कोई सवार न हो। काका ने बिना [illegible] किए हुक्म किया—"गोली मार दो!"

एक डाकू ने राइफ[illegible]

"ठहरो!" काक[illegible]

राइफल की [illegible]

"क्या तुम राइ[illegible] करना चाहते हो?" कहकर काका [illegible] उसकी नली पर साइलेंसर चढ़ाया। फिर उन्होंने [illegible] तीन गोलियाँ दाग दीं।

घोड़े ने केव[illegible] फिर इस तरह गिरकर आँखें सदा के लिए [illegible] स्वर्ग-लाभ हुआ हो।

काका ने वह कर[illegible]या।

चलने की तैयारी पूरी [illegible]

सबसे अलग [illegible]क कोने में जग्गू और नालू अपनी खिचड़ी अल[illegible] पका रहे थे। उन्होंने काक[illegible] नहीं [illegible] था।

"[illegible] जग[illegible]"

"हाँ, क्या कहती है?"

"हमारी भलाई इसी में है कि हम किसी तरह पुलिस तक जा पहुँचें।"

"अब तो हमें सबके साथ ही चलना पड़ेगा।"

"अब काका जाने कौन-से बीहड़ में जाएँ।"

"काका से बोलो कि हमें यहीं छोड़ जाएँ। पुलिस वाले हमें अपने आप ले जाएँगे।"

"काका ऐसा हर्गिज़ नहीं करेंगे।"

"हाँ, सो तो है।"

इस तरह काका की अपनी योजना के साथ-साथ एक और नन्ही-सी योजना पककर तैयार हो गई। डाकू लोग चारों तरफ पैरों के निशान बना आए थे। अब वे अपने निश्चित रास्ते पर कूच करने के लिए तैयार थे। बस, काका के हुक्म की देर थी।

काका ने हुक्म दिया। गिरोह चल पड़ा। नीलू और जग्गू मन-ही-मन अपनी योजना पर खुश थे। दोनों इस तरह उछल [illegible] मेला देखने जा रहे हों।
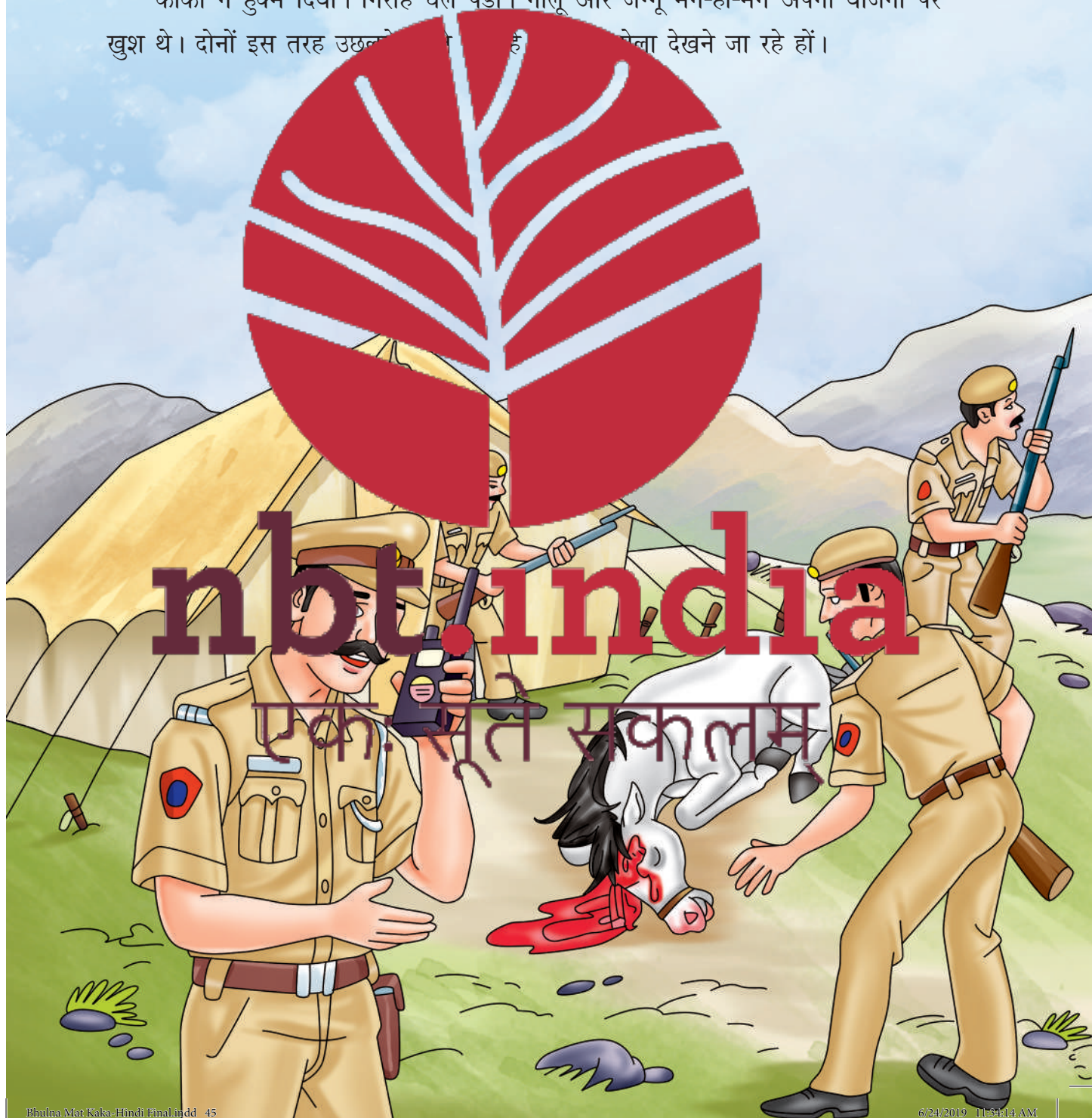
काका ने पुलिस की योजना समझने में थोड़ी भूल कर दी थी। इस बार पुलिस ने उनके लिए बहुत बड़ा जाल फैलाया था।

पुलिस की दो भरी हुई लॉरियाँ बीहड़ के किनारे पर डेरा डाले खड़ी थीं। इसके अलावा, तीन-तीन सिपाहियों की दस टुकड़ियाँ बीहड़ों में डाकुओं की खोज करने गई हुई थीं। प्रत्येक टुकड़ी के पास एक वायरलैस सैट था। ये टुकड़ियाँ डाकुओं से उलझने के लिए नहीं बनाई गई थीं। इनका काम डाकुओं [illegible] कंट्रोल-रूम को ख़बर करना भर था। उसके बाद पुलिस पूरे [illegible] पहुँचकर डाकुओं पर हल्ला बोलने वाली थी।

डाकुओं के [illegible] उस स्थान पर पहुँची। मरे हुए घोड़े के [illegible] ता चल गया कि डाकू लोग कुछ देर [illegible] किस तरफ होंगे।

पुलिस के तीनों [illegible] ड़ताल [illegible]।

“हैलो, कं[illegible] कंट्रोल!”

“येस, कंट्रोल[illegible]

“मैं टुकड़ी नंबर [illegible] डाकुओं के गिरोह का पता लगा लिया है। गिरोह कुछ [illegible] जो हमने नक्शे में ‘एक्स’ अक्षर से दिखाई है। आप[illegible] नक्शा खोल लिया है?”

“हाँ, हाँ, क[illegible]ओ!”

डाकू [illegible] हाँ [illegible] पश्चिम [illegible] ओर भागे [illegible] जस [illegible] उन [illegible] अपहरण [illegible] बच्चे हैं। वे बच्चे रास्ते में टहनियाँ तोड़-तोड़कर फेंकते गए हैं। उनके लिए यह खेल रहा होगा, सर। पर हमें इससे उनका पता [illegible] जाएगा।”

“जरा ठहरो... पश्चिम में तो बहुत-सा इलाका मैदानी है। डाकू लोग उधर नहीं जा सकते।”

“डाकू उधर ही गए हैं, सर! हो सकता है हमें चकमा देने के लिए वे खतरा उठाकर भी मैदानी इलाके में से होकर निकल भागना चाहते हों।”

"अच्छा, ठीक है। हम आगे से मैदानी इलाका घेर लेते हैं। तुम लोग उस जगह पहुँचो, जो नक्शे में 'जे' अक्षर से दिखाई गई है। हम सभी टुकड़ियों को 'जे' वाले स्थान पर इकट्ठा कर रहे हैं। तुम लोग अपनी तरफ से कोई गोलीबारी मत करना। 'जे' वाली जगह पर हमारे अगले ऑर्डर का इंतजार करो।"

"ओके, सर।"

"ओवर।"

बातचीत खत्म हो [illegible]।

डाकू पीछे की तरफ रेंगने लगे, तो पुलिस ने उन पर गोलियों की बौछार छोड़ी। डाकुओं ने भी जवाबी गोलियाँ चलाईं। पुलिस आड़ में थी और डाकू खुले में। फिर भी किसी डाकू के मुँह पर बदहवासी नहीं छाई थी।

"अगर मैं मर जाऊँ।" सहसा काका ने घोषणा की, "तो इन दोनों बच्चों की किसी कीमत पर रक्षा की जाए और इन्हें वापस अपने माँ-बाप के पास पहुँचा दिया जाए!"

नीलू ने कहा, "काका, [illegible] हूँ।"

नीलू ने सिर ऊपर [illegible] दबा दिया। फिर बोले, "तुम दोनों अपने सिर नी[illegible] साथ [illegible]

पुलिस ने ब[illegible] छोड़ रहे थे। यही कारण था कि किसी डाकू [illegible] पुलिस [illegible] स्ते पर गोलियाँ बरसा रही थी, जिधर [illegible] उद्देश्य [illegible] तरफ जाने से रोकना था।

“जग्गू रे!” नीलू जग्गू के कान में फुसफुसाई।

जग्गू ने चेतावनी दी, “सिर नीचे ही रखना नीलू। वरना कोई गोली सिर फोड़ जाएगी और तुझे पता भी न चलेगा—समझी?”

“जग्गू रे, तुझे याद है—बांग्लादेश में पाकिस्तानी सिपाही बच्चों की आड़ लेकर लड़ाई लड़ते थे।”

जग्गू ने बात पूरी की—“ताँकि [illegible] उन पर गोलियाँ न चलाए।”

“और काका बिल्[illegible] देकर हमें बचा रहे हैं।” नीलू ने कहा।

काका का [illegible] था। उन्हें बिल्कुल भी आभास नहीं [illegible] फुसुर कर रहे थे। वह उनकी बातें [illegible]

डाकू लो[illegible] कुछ ही कदम दूर रह गई थी। काका [illegible] ने नाकाम कैसे हो रहे थे। उनके किसी [illegible] तक नहीं आई [illegible]

एक-एक कर[illegible] निशाने क्यों बेकार हो गए थे, यह नीलू ने देख लिया। [illegible] उभरा था। वह चेहरा उसके पिता थानेदार ब्रजराजसिंह का [illegible]

नीलू और जग्गू ने कुछ क्षण की खुसुर-फुसुर के बाद एक [illegible] कदम उठाया, जिससे सभी [illegible] चौंक [illegible]

दोनों बच्चे [illegible] और [illegible]

काका चिल्लाया—“मूर्खो! यह क्या करते हो! गोली लग जाएगी!”

मगर नीलू-जग्गू नहीं रुके।

इसके बाद काका ने जो काम किया, वह डाकू-दल और पुलिस-दल दोनों को ही चौंका देने वाला था।

काका अपनी जगह से उठे और जग्गू और नीलू के पीछे भागे। जब काका ने दोनों बच्चों को जाकर पकड़ा, तब तक वे पुलिस-दल के काफी नज़दीक पहुँच चुके थे।

फुर्ती से आड़ में छिपे हुए दस-बारह सिपाही बाहर उछले और काका तथा बच्चों को खींचकर फिर आड़ में कर लिया।

नीलू के एक तरफ उसके पिताजी खड़े थे—थानेदार ब्रजराजसिंह! दूसरी तरफ सिपाहियों से घिरे काका थे।

सहसा नीलू सिपाहियों की परतें चीरकर काका से लिपट गई। वह चिल्लाई, "इन्हें छोड़ दीजिए। इन्हें वापस लौट जाने [illegible] हमारी बात मानी है।"

थानेदार साहब [illegible] उनके सामने थी और उनकी तरफ ध्यान न देकर [illegible]

काका ने [illegible] के साथ जाओ, बेटी। जाने किस डोर [illegible] जिंदा होती, [illegible] साथ सौभाग्य नहीं, [illegible]

नीलू ने भी जैसे हठ पकड़ ली। “मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी, काका। पिताजी तुम्हें जेल में बंद कर देंगे, तो मैं भी तुम्हारे साथ जेल में रहूँगी।”

अभी तक पीछे खड़े थानेदार साहब आगे बढ़े और काका से बोले, “काका, आपने जिस प्यार से इन बच्चों को रखा है, वह अपने आप में एक मिसाल है। आप अपने पूरे दल के साथ अगर आत्मसमर्पण कर दें, तो मैं कोशिश करूँगा कि आपको कम-से-कम सजा मिले, ताकि आप जल्दी-से-जल्दी [illegible] सकें।”

काका बोले, “मैं [illegible] साहब। पर यह मत समझ लेना कि मैंने तुमसे हार [illegible] मान सकता था। मैंने तो हार मानी है इन [illegible]

थानेदार [illegible] काका। परसों ताँतपुर में तीन बड़े-बड़े [illegible] डालकर अपनी नई ज़िंदगी शुरू करेंगे। क्यों [illegible]

“तो क्या [illegible] छोड़ [illegible] हैं?” काका [illegible]।

“नहीं, काका [illegible] जाए, उसी डोर से बाँधकर आपको वापस भेज [illegible] अपने दल को आत्मसमर्पण के लिए राज़ी कर लेंगे। फिर [illegible] जो लोग नहीं मानेंगे, उन्हें छोड़कर और बाकी सबको साथ लेकर आप परसों आ रहे हैं, तो हमें आपके ऊपर पूरा भरोसा है।”

[illegible] के [illegible] स्वरूप [illegible] आँखों [illegible] जल को आँखों [illegible] ठहराए हुए नीलू और [illegible] को अपनी छाती से लगाया [illegible] स्वर में बोले, “आऊँगा। मैं जरूर आऊँगा। काका को मज़बूती से बाँध लिया है इन बहादुरों ने।”

“ठीक है, तो अब आप जा सकते हैं।”

काका जाने लगे, तो नीलू फिर ज़ोर से उनसे लिपट गई।

“काका, परसों ताँतपुर जरूर आना। मैं भी आऊँगी। भूलना मत, काका!” सबकी आँखें गीली हो गईं।

आइडियल पब्लिशिंग साल्यूशंस, दिल्ली द्वारा शब्द संयोजन तथा रॉयल ऑफसेट प्रिंटर्स, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित